thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 21 रोहतक, 28 अक्तूबर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

ईश्वर को मानने वाले अधिक और जानने वाले बहुत कम

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

संसार में ईश्वर पर विश्वास रखने वालों की संख्या बहुत अधिक है, ईंट, रोड़ा, पत्थर, मूर्ति आदि सबको ईश्वर मानकर पूजने लगते हैं और ईश्वर की सत्ता को स्वीकार न करने वाले के मुख से भी कभी न कभी भूल-चूक में यह शब्द तो निकल ही जाता है कि एक दिन सबने जाना है, उसकी माया वही जाने, अर्थात् उनका इशारा (संकेत) ईश्वर की ओर ही होता है। ईश्वर की सत्ता को न मानने वाले बहुत कम हैं। ईश्वर के विषय में लोगों के भिन्न-भिन्न मत हैं। सभी मत-मतान्तरों ने अपने-अपने मन में एक ईश्वर गढ़ रखा है, उसी को पूजते हैं और वह ईश्वर कैसा है, उनकी अपनी कल्पना से बनाया हुआ है। मैंने एक कार्यक्रम में देखा पण्डित जी हवन करा रहे थे, बोले गणेश जी की मूर्ति लाओ, हवन कराने वाले परिवार के एक सदस्य ने कहा पण्डित जी गणेश की मूर्ति तो घर में नहीं है, कहो तो बाजार से खरीदकर मंगवा लेते हैं। पंडित जी बोले मेरे पास इतना समय कहाँ है? आप ऐसा करो कि मिट्टी की बड़ी-सी ढेली ले आओ। वह मिट्टी की एक ढेली उठा लाये और पण्डित जी को दे दी। पण्डित जी ने उसे थोड़ा साफ किया, उसको गोल सेप दी और उस पर रंग-बिरंगा धागा बांध दिया और कहा ये गणेश जी बन गये, लो इसको हाथ जोड़कर मन में गणेश जी का विचार करो, वह आपकी सुख-शान्ति और सब मनोकामनाएं पूरी कर देंगे। पण्डित जी ने उस मिट्टी के ढेले की हल्दी से तिलक लगाया, चावल चढ़ाये और कहा कि गणेश जी को भेंट चढ़ाओ। एक सौ एक रुपया रखवा लिया। बाइबिल में लिखा है कि खुदा ने मनुष्य को अपनी शक्ल का बनाया है (Man made God in his own emage) और ईश्वर या देवी-देवताओं की जितनी भी मूर्तियां बनाई जाती हैं वह सब स्त्री-पुरुष की ही शक्ल की होती हैं, उनका महत्त्व बढ़ाने के लिए किसी के चार हाथ और आठ हाथ बना दिये जाते हैं। संसार में तो कोई चार हाथ और आठ हाथ वाला किसी स्त्री-पुरुष उत्पन्न हुआ सुना नहीं, फिर ये तो स्त्री-पुरुष की शक्ल को बिगाड़ कर देवी-देवता बना लिये और उनकी अपने-अपने ढंग से पूजा अर्चना करने लगे। कुछ लोग ऐसे हैं जो मूर्तियां नहीं भी बनाते और बुतपरस्ती का खण्डन करते हैं, उन्होंने भी ईश्वर के विषय में मनुष्य जैसी भावनाएं बना डाली। बहुत से बड़े लोग बड़े स्थानों पर रहते हैं, ईश्वर तो उनसे भी बहुत बड़ा है, उसका निवास स्थान बहुत ऊँचा होना चाहिए, सातवें या चौथे आसमान पर उसका निवास स्थान है और राजाओं जैसा बड़ा सिंहासन है, बड़ा दरबार है, मंत्री वर्ग हैं, शासन की सुविधा के लिए दूत या फरिश्ते हैं। मनोरंजन के लिए परियां, अप्सराएं हैं। इस प्रकार की मनघड़न्त पुस्तकें पढ़ते जाइए, वहां इनका विस्तृत ब्यौरा मिलेगा। कुछ क्या कहते हैं कि ईश्वर भी किसी युगल को चुनकर उनके घर में जन्म ले लेता है, इसको अवतार कहते हैं। श्रीराम, श्रीकृष्ण जी आदि को अवतार मानते हैं। मनघड़न्त कहानियां घड़ रखी हैं, जैसे बिना पिता के संसर्ग से कुमारी मरियम के पेट से ईसा की उत्पत्ति या खम्भे से नृसिंग की उत्पत्ति। बुद्धि से काम लेना छोड़ ही दिया है। ईसाइयों ने कहा खुदा का अवतार ईसा था, कृष्ण नहीं, कृष्ण के उपासकों ने कहा-ईश्वर का अवतार तो कृष्ण ही है, ईसा नहीं। कृष्ण पूरे सोलह कला के अवतार थे। राम केवल बारह कला के ही थे। कई कहते हैं कि वह निराकार नहीं साकार है। कुछ का कहना है कि मूल में तो वह निराकार ही है, परन्तु सर्वशक्तिमत्ता के कारण वह आकार भी धारण कर सकता है। कौन-सा काम है जो ईश्वर नहीं कर सकता और जो न किया हो।

यजुर्वेद 40/8 मन्त्र-**'स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर'** ईश्वर के गुण पर भी विवाद है। ईश्वर सगुण है या निर्गुण या दोनों? कुछ लोगों ने निर्गुण को निराकार और सगुण को साकार मान रखा है। इसका सबसे अच्छा समाधान महर्षि दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश में मिलता है। जो न्याययुक्त भी है, मनोवैज्ञानिक भी, स्वाभाविक भी और मानने योग्य भी है।

सगुण और निर्गुण-दोनों का तुलनात्मक विचार करने से उस पदार्थ के पहचानने में कोई सन्देह न रहे। वेदमन्त्र (स पर्यगात्) में सगुण और निगुण दोनों प्रकार की उपासना या स्तुति है जिससे पता चल जाये कि हम ईश्वर को ही ईश्वर मानें, किसी दूसरे पदार्थ को ईश्वर न मानें।

पहला गुण है पर्यगात्-अर्थात् वह सवर्ग है, उसकी गति हर वस्तु में है। कोई वस्तु ईश्वर के अस्तित्व से खाली नहीं। ऐसा नहीं है कि वह महर्षियों के हृदय में है, दुष्टों के हृदय में नहीं। फूलों में है, मल-मूत्र में नहीं। जैसे बिजली गन्दी से गन्दी वस्तु में व्यापक होती हुई भी उसकी गन्दगी से प्रभावित नहीं होती, इसी प्रकार से ईश्वर पर उसका कोई प्रभाव नहीं, गन्दगी प्राकृतिक अवगुण है, ईश्वर उसमें भी व्यापक है। दूसरे ईश्वर शरीर रहित है, यह मानने के लिये बहुसंख्यक लोग मानने को तैयार ही नहीं और जब उन्हें कोई ये शब्द कह दे कि श्रीराम, श्रीकृष्ण भगवान् नहीं थे तो एकदम से आपे से बाहर हो जाते हैं, जैसे म्यान से तलवार बाहर निकलने पर यह समझा जाता है कि अब यह किसी का काम तमाम कर डालेगी। प्राय: देखने में यही आता है कि ज्यों ही लोग भजन करने लगते हैं तो कोई हरे राम, कोई हरे कृष्ण और किसी का ध्यान ईसामसीह के घावों का ध्यान कर रहा है तो कोई अल्ला-अल्ला पुकार रहा है। कोई देवी का ध्यान कर रहा है, कोई गणेश जी की आरती उतार रहा है, कोई हनुमान चालीसा पढ़ रहा है तो कोई देवी शेरावाली के दरबार में झोली भरने की गुहार लगा रहा है, कोई मजार पर चादर चढ़ा रहा है और बड़ा ही आश्चर्य होता है जब देश की कुछ जानी मानी हस्तियाँ, मंत्री, मुख्यमंत्री आदि मूर्तियों के आगे अपनी सफलताओं की गुहार लगाते हैं। कई नेताओं को पण्डे-पुजारियों के आगे हाथ जोड़कर आशीर्वाद अपनी जीत, सफलता का लेते देखा है और जब चुनाव नजदीक आते हैं फिर तो देवी-देवताओं को खुश करने की होड़ लग जाती है। वाह रे मेरे देवी-देवताओं का भारत देश, फिर भी आपराधिक घटनाओं में कर रहे हैं प्रवेश।

ईश्वर का एक और गुण बतलाया-**अपापविद्धम्**-अर्थात् पाप उसको बींध नहीं सकता। पाप क्या है? कर्त्तव्य का पालन न करना अर्थात् ईश्वर आज्ञा को न मानना और अकर्त्तव्य को करना अर्थात् ईश्वर ने जिसको न करने के

शेष पृष्ठ 8 पर....

thearyasamaj.org

सांसारिक जीवन के सुख व मोक्ष का प्रमुख आधार हमारा स्वास्थ्य

❑ मनमोहन कुमार आर्य

स्वास्थ्य मानव शरीर की वह अवस्था है जिसमें वह निरोग, बलवान व कार्य करने में औसत से अधिक कार्य करने की क्षमता से युक्त हो। शरीर के अन्नमय होने से इसका आधार भोजन है। शरीर में रहने वाली जीवात्मा एक चेतन तत्व है जो ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुसार ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप, इनके गुण, कर्म व स्वभाव को जानकर जीवात्मा के द्वारा ईश्वर की उपासना एवं ध्यान से स्वस्थ व बलवान बनती है। स्वास्थ्य सुख का आधार होता है। हमारे जीवन की सभी क्रियायें भी सुख की प्राप्ति के लिए ही की जाती हैं। स्वास्थ्य अच्छा, निरोग व बलवान हो, इसके लिए स्वस्थ मन व स्वस्थ मन के लिए स्वस्थ शरीर एवं इसमे एक ज्ञान से युक्त आत्मा की आवश्यकता होती है। ज्ञानी आत्मा की आवश्यकता इसलिए होती है कि वह मन को नियंत्रण में रखकर उसे सत्परामर्श दे सके। जीवात्मा व ईश्वर का साक्षात्कार करने वाले एक योगी वा वेद मनीषी ने एक महत्वपूर्ण श्लोक दिया है जिसमें वह कहते हैं कि जल से शरीर शुद्ध व स्वस्थ होता है, मन सत्य से शुद्ध होता है, विद्या व तप से मनुष्य की आत्मा और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध या पवित्र होती है। मन सत्य से शुद्ध होता है। इसका अर्थ है कि हमें जीवन को सुखमय बनाने व जीवन के लक्ष्य एवं साध्य की प्राप्ति के लिए मन को सत्य से युक्त करना होगा। मन को सत्य से कैसे युक्त किया जाता है, यह भी जान लेते हैं। सत्य किसी पदार्थ के सत्य व वास्तविक गुणों तथा उसके स्वभाव, चरित्र व व्यवहार के ज्ञान को कह सकते हैं। किसी पदार्थ में जो गुण हैं व उसका जो स्वरूप है, उसके विपरीत यदि हमारी मान्यता या ज्ञान है तो वह असत्य कहलाता है। वेद, ईश्वर, आत्मा व योग का ज्ञान तथा अनुभव रखने वाले प्रसिद्ध विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती का कहना है कि जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही जानना व मानना तथा जैसा वह नहीं है, उसको भी जानना कि वह वैसा नहीं है, सत्य कहलाता है। सत्य को जानने में ही मन की सार्थकता होती है। मन सत्य से युक्त होकर तथा बुद्धि के संकल्प-विकल्प व इसके सत्यासत्य के विवेचन से तीनों अर्थात् मन, बुद्धि व आत्मा सत्य से संयुक्त होकर जीवन को सत्य मार्ग पर चलाते हैं जिससे जीवन का कल्याण, उन्नति व अनेक लाभों में से स्वास्थ्य भी अनुकूल, दृढ़ व बलवान होता है और मनुष्य सच्चा सुख प्राप्त करता है। ऐसा मनुष्य जो भी भोजन करेगा वह ऐसा होगा जो शरीर को लाभ पहुंचायें और जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहे।

मनमोहन कुमार आर्य

हमें यह भी जानना है कि स्वास्थ्य का आधार मुख्यतः भोजन है। शास्त्र कहते हैं कि आहार, निद्रा, भय व ब्रह्मचर्य, यह चार स्वास्थ्य के आधार हैं। यद्यपि आहार में हमारे सभी ज्ञानी बन्धु मुख्यतः भोजन को ही सम्मिलित करते हैं परन्तु शुद्ध वायु में श्वास लेना व हमारे भोजन के घटकों का उत्पादन कृत्रिम रसायनिक खाद के प्रयोग से न होकर प्राकृतिक खाद के प्रयोग से होना चाहिये जिससे भोजन के पदार्थ हमारे स्वास्थ्य के लिए शक्तिप्रद व सुखदायी हों। भोजन के साथ-साथ हम जानते हैं कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए समय पर सोना और समय पर जागना भी आवश्यक है। सोने का आदर्श समय रात्रि 10:00 बजे व उठने का प्रातः 4:00 बजे है। प्रातः 4:00 बजे उठकर क्या करें, इसके लिए पहला कार्य तो सृष्टिकर्ता ईश्वर का चिन्तन करना व उसके पश्चात शुद्ध वायु का सेवन करना और इसके लिए 1 से 2 घंटे तक भ्रमण करना है। भ्रमण के बाद व्यायाम करने से स्वास्थ्य को विशेष लाभ होता है। छोटे बच्चे को हम रोते हुए देखते हैं। वह अपने हाथ व पैरों को झटकता व पटकता रहता है। यह सब क्या है? यह उसका अपना व्यायाम है जो उसे ईश्वर या प्रकृति ने सीखा कर भेजा है। हममें पलक झपकने या श्वास लेने की प्रक्रिया स्वचालित रूप से कार्य करती है। प्राणायाम से श्वसन प्रणाली को शक्ति व बल मिलता है। इन दोनों से हमारी आंखें व श्वसन प्रणाली समस्त आयु पर्यन्त स्वस्थ रहती है। यद्यपि यह पलक झपकने की क्रिया व श्वसन प्रणाली स्वचालित है परन्तु किसी भी क्रिया का एक या अधिक कारण हुआ करते हैं। यहां हम अपनी आत्मा को इसका कारण मान लेते हैं। सभी शरीरों में यह क्रिया सामान्य रूप से चल रही है। अज्ञानी से अज्ञानी आत्मा में भी ऐसा ही होता है इससे लगता है कि आत्मा इसे न चलाकर, आत्मा से इतर सत्ता जिसे आध्यात्मिक लोग ईश्वर कहते हैं, उससे संचालित है, यह स्वीकार करना पड़ता है। यह एक सिद्धान्त है कि जिस कार्य का कारण कोई भी मनुष्य सिद्ध न हो, उसे ईश्वर से संचालित मान लेना चाहिये। इससे हमें अनेक प्रकार से लाभ ही होता है, हानि कुछ नहीं होती। कुछ बन्धु ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते हैं। इस विषय में यह तथ्य है कि यदि ईश्वर न हो तो भी ईश्वर को मान लेने पर उसको मानने वालों की कुछ हानि नहीं होती परन्तु यदि ईश्वर है और वह उसे नहीं मानते तो उनकी हानि ही हानि है, क्योंकि वह उसे जानने व उससे प्राप्त होने वाले लाभों से वंचित रह जाते हैं और अपने असत्य व्यवहार के कारण दण्ड भी पाते हैं। हमने स्वास्थ्य के आधार के रूप में भोजन या आहार की बात की व उसके बाद निद्रा की बाद की। स्वास्थ्य का एक आधार भय भी कहा जाता है। भयभीत व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। वह भयातुर रहता है जिससे वह अस्वस्थ रहता है। भयभीत रहना भी स्वास्थ्य के लिए अहितकर है। अस्वस्थ व्यक्ति के उपचार में इस तथ्य का भी ध्यान रखना होता है कि कहीं वह किसी से भयातुर तो नहीं है। उसके भय के कारण को दूर करने से वह स्वस्थ हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान से सबसे बड़ा लाभ भय का निवारण होता है। अध्यात्म के अध्ययन से हमें पता चलता है कि प्रत्येक प्राणी की मृत्यु अवश्य होनी है जो उसके पूर्व-जन्म के प्रारब्ध या भाग्य तथा वर्तमान जीवन के अनेक कारकों पर आधारित है। वर्तमान जन्म में पुरुषार्थ से आयु को बढ़ाया जा सकता है। इस जन्म में सभी प्राणियों की मृत्यु होना निश्चित है और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म भी सुनिश्चित है जो कि हमारे प्रारब्ध, भाग्य व कर्मों के आधार पर होगा। इस पुनर्जन्म के सिद्धान्त, इसकी वास्तविकता व ज्ञान से अच्छे कर्मों या कार्यों को करने की प्रेरणा मिलती है और मृत्यु का भय दूर हो जाता है। इसके पश्चात ब्रह्मचर्य या संयम का स्थान है। ब्रह्मचर्य एक प्रकार से संयम ही है। संसार में असंख्य अच्छे व बुरे विषय हैं। यदि हम अनुचित विषयों का ध्यान, चिन्तन व मनन करते हैं तो इससे स्वास्थ्य के लाभ के स्थान पर हानि होती है। हमें अपने मन को नियंत्रित करके उसे सत्य व ज्ञान की प्राप्ति में लगाना चाहिये और ईश्वर, आत्मा व प्रकृति के सत्य ज्ञान को प्राप्त करना चाहिये। ऐसा हो जाने पर हम विज्ञान व उससे जुड़े अनेकानेक विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। विज्ञान, चिकित्सा, वाणिज्य, अर्थशास्त्र व इंजीनियरिंग आदि अनेक विषय हैं जिनकी हमें, हमारे समाज व देश को आवश्यकता है। इसको व्यापक रूप से जानना व उसका व्यक्तिगत, सामाजिक व देश के लिए उपयोग करने के लिए ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन सहायक होता है। जीवन को ब्रह्मचर्य पूर्वक व्यतीत करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और यह भी स्वास्थ्य का प्रमुख आधार है।

स्वास्थ्य के दो और भी आधार है जिनमें से एक आसन व दूसरा प्राणायाम है। योगदर्शन में योग के आठ अंगों में से दो अंग हैं, आसन और प्राणायाम। आसन का समावेश व्यायाम में हो जाता है। इसका उल्लेख हम कर चुकें हैं। हमें प्राणायाम को भी जानना है। प्राणायाम भी प्राणों का व्यायाम ही है। प्राणों को दृण व अधिक उपयोगी बनाने के लिए प्राणायाम किया जाता है। प्राणायाम लम्बा श्वास लेकर अधिक शुद्ध वायु व ऑक्सीजन को अधिक से अधिक मात्रा में अपने फेफड़ों में पहुंचाना और अधिक से अधिक फेफड़ों की दूषित वायु कार्बन डाई आक्साइड गैस को लम्बे बाहरी श्वांस द्वारा बाहर निकालना होता है। इससे हृदय के रक्त की शुद्धि सामान्य गति से श्वास लेने से अधिक मात्रा में होती है और अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है। जब हम प्राणायाम कर रहे होते हैं तो इससे हमारे शरीर के छोटे-बड़े सभी अंग व प्रत्यंग प्रभावित होते हैं जिससे उनका व्यायाम होने में उनकी शक्ति व कार्यक्षमता बढ़ती है व वह पुष्ट होते हैं। आरोग्य की प्राप्ति के साथ सभी अंग अधिक समय के लिए कार्य योग्य हो जाते हैं जिससे हमारी आयु में भी वृद्धि होती है। अतः सभी को अपनी आयु व शारीरिक स्थिति के अनुसार योग के आसन व प्राणायाम को करना चाहिये।

यहां हम स्वास्थ्य के तीन आधारों ऋतभुक्, हितभुक् व मितभुक् की भी चर्चा करना चाहते हैं। ऋतभुक् ऋतु के अनुसार भोजन के पदार्थों के सेवन को कहते हैं। मुख्यतः हमारे देश में शीत,

शेष पृष्ठ 8 पर....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

सज्जन पुरुष के लक्षण

-: मन्त्र :-

स हि सत्यो यं पूर्वे चिद्देवासश्चिद्यमीधिरे।
होतारं मन्द्रजिह्वमित्सुदीतिभिर्विभावसुम्॥ (ऋ० 5/25/10)

अर्थ—(स हि सत्यः) निश्चय से सज्जन पुरुष वही है जिसे (पूर्वे चित्) वृद्धजन और (यम् देवासः चित्) विद्वान् (ईधिरे) प्रसिद्ध करें। ऐसे (विभावसुम्) सब धनैश्वर्य से सम्पन्न होकर जिस (होतारम्) दान करने वाले और (मन्द्र जिह्वम्) मधुर भाषी (सुदीतिभिः) गुणों से प्रकाशित की वृद्ध लोग और विद्वान् प्रशंसा करें वही सत पुरुष या सज्जन जानना चाहिये।

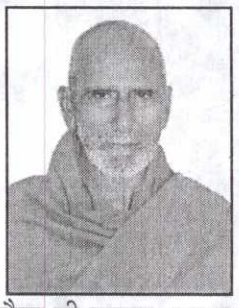

जो सत्य का व्यवहार करे उसे सज्जन कहते हैं। जैसा देखा, जैसा सुना और जैसा अपने मन में हो उसे वैसा ही कहना, करना और मानना सत्य कहलाता है परन्तु वह सत्य मधुर और परोपकारक होना चाहिये। **स हि सत्यः** सज्जन पुरुष वह है जिसकी **पूर्वे चिद् देवासश्चिद् यमीधिरे** वृद्धजन और विद्वान् लोग प्रशंसा करें। कौन व्यक्ति सज्जन या दुर्जन है इसमें लोक प्रमाण हैं। लोगों में भी जो अनुभवी वृद्ध जन और विद्वान् हैं उन्हें वास्तविकता का ज्ञान रहता है और वे जिसकी स्तुति करें उसे सज्जन पुरुष मान लेने में कोई दोष नहीं है। वे आप्तजन होने से उनका कथन प्रमाण कोटि में आता है। मन्त्र में सज्जन पुरुष के कुछ गुण बतलाये हैं—

1. **होतारम्**—दान देना जिनके स्वभाव में है। उसके स्वभाव का वर्णन करते हुए कहा है—

अहो किमपि चित्राणि चरित्राणि महात्मनाम्।
लक्ष्मीं तृणाय मन्यन्ते तद् भारेण नमन्त्यपि॥ क्रमशः

ऐ आर्यो!

सूबे० करतारसिंह आर्य

यदि सत्य पर चलना चलाना मुश्किल।
तो आर्य भी बनना बनाना मुश्किल॥
जो खुद ही न जागे, रहे ख्वाबे गफलत।
तो सोते जहाँ को जगाना है मुश्किल॥
रहे तुम जो आपस में लड़ते झगड़ते।
तो फिर प्रेम गंगा बहाना है मुश्किल॥
स्वयं न बनो जब तलक आर्य तुम।
जहाँ को फिर आर्य बनाना है मुश्किल॥
हवन यज्ञ से दूर हटते रहे गर।
तो ऋषियों का युग फिर से आना है मुश्किल॥
बहुत रहनुमा आये हैं और आयेंगे भी।
दयानन्द स्वामी से आना है मुश्किल॥

दिल न लगाना इस दुनिया में, दुनिया आनी जानी है।
मोहमाया और रूप सुन्दरता, हर चीज यहां रह जानी है॥
कोई इस दुनिया में रहा नहीं, आये और सारे चले गये।
हाथ बान्ध कर आये थे, और हाथ पसारे चले गये।
दो दिन का है मेला प्यारो, कुछ दिन की जिन्दगानी है।
दिल न लगाना इस दुनिया में, दुनिया आनी जानी है॥
खाली हाथ तू आया बन्दे, खाली हाथ तू जायेगा।
महल अटारी सब धन-दौलत, धरा यहीं रह जायेगा।
ओ३म् नाम तू जप ले प्यारे, पार उतारण वाणी है।
दिल न लगाना इस दुनिया में, दुनिया आनी जानी है॥
जिसने किये शुभ कर्म जगत् में, सो तन मुक्ति पाई है।
विषयों के चक्कर में तूने, क्यों यह उमर गंवाई है।
लाख यत्न कर बचने का तू, मृत्यु फिर भी आनी है।
यह दुनिया है एक सराय, हर चीज यहाँ पर फानी है।
दिल न लगाना इस दुनिया में, दुनिया आनी जानी है॥

भेंटकर्त्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

योग-ध्यान-साधना शिविर सम्पन्न

आनन्द धाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू-कश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में 14 से 21 सितम्बर तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें हिमाचल प्रदेश, ज़म्मू-कश्मीर, राजस्थान, दिल्ली, पानीपत, सोनीपत, उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों से शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रातःकाल श्रीरामभिक्षु एवं आश्रम के मंत्री डॉक्टर सुरेश जी साधक को योगासन एवं प्राणायामादि का अभ्यास कराते थे और फिर उसके बाद पूज्य महात्मा जी क्रियात्मक योगाभ्यास करवाते थे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायणयज्ञ भी हुआ। आचार्य संदीप आर्य जी योगदर्शन का अध्ययन करवाते थे और साधकों की शंकाओं का समाधान भी करते थे। वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी ने भी श्रोताओं को अपने प्रभावशाली प्रवचनों द्वारा उपकृत किया। उनके वैदिक-सन्ध्या पर किए गए प्रवचन श्रोताओं को अत्यधिक हृदयाग्राही लगे। माँ सत्यप्रिया यति, माता आनन्दायति और श्रीमती चंचल तथा अन्य शिविरार्थियों के समय-समय पर भजन होते रहे। आश्रम के प्रधान श्री भारतभूषण आनन्द, कार्यकारी प्रधान श्री विजय भगोतरा, महामन्त्री श्री यादवेन्द्र शर्मा, माता रामप्यारी और श्रीमती सुदेश आदि अन्य महानुभावों के सहयोग से शिविर बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

-श्री भारतभूषण आनन्द, प्रधान

चौ० लखीराम आर्य अनाथालय

दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

अनाथ व बेसहारा लड़कों के दाखिले शुरू हैं

उम्र 6 से 8 साल हो, स्कूल में जाता हो, किसी किस्म का रोग न हो, जाति का कोई भेदभाव नहीं है। जन्मतिथि प्रमाण-पत्र साथ लेकर आयें। दाखिले का प्रार्थना-पत्र अनाथालय के प्रधान के नाम लिखकर लायें जिसमें लड़के की उम्र, नाम, माता-पिता का नाम, सालाना आय व खेती की जमीन का ब्यौरा व प्रार्थी अपने हस्ताक्षर करेगा और गांव के सरपंच की सिफारिश व हस्ताक्षर कराकर लाना जरूरी है। खाना, रहना, पढ़ाई, बीमार होने पर इलाज, कपड़े सब मुफ्त।

मोबाइल नं० 9466725461

श्री सोहनलाल मनचन्दा दिवंगत

श्री सोहनलाल मनचन्दा 15 दिन तक अति रुग्ण होने के कारण दिनांक 14.10.2014 को 66 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गये। श्री मनचन्दा जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कोषाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल आर्य के समधी थे। उनके निधन से समाज से एक निष्ठावान व समर्पित व्यक्तित्व का अभाव हो गया है। वह विनम्रता और सरलता की प्रतिमूर्ति थे। आर्यसमाज से उनका विशेष स्नेह था। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को वह यदा कदा सहयोग करते रहते थे। वह अपने पीछे अपनी पत्नी श्रीमती सरोज मनचन्दा एवं तीन पुत्रियों श्रीमती सीमा (विनोद) मेहता, इन्दु (दिनेश) आर्य, अलका (सुशील) मल्होत्रा को छोड़कर गये हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के सभी सदस्य, कार्यकर्त्ता एवं अधिकारीगण श्री मनचन्दा जी के निधन के समाचार को जानकर हार्दिक रूप से दुःख का अनुभव कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति की प्रार्थना करते हैं।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

thearyasamaj.org

गुरुकुल शिक्षा के बिना सामाजिक उत्थान असंभव : डॉ. अवधेशानंद गिरि

गाय मात्र पशु नहीं, बल्कि देश की माता है : आचार्य विजयपाल

कुरुक्षेत्र, 18 अक्तूबर, 2014

कनखल हरिद्वार के महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. अवधेशानंद गिरि महाराज ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा के बिना सामाजिक उत्थान असंभव है, क्योंकि गुरुकुल शिक्षा विद्यार्थियों को सत्य, अनुशासित, सदाचारी व संस्कारित बनाने के लिए कटिबद्ध है। गुरुकुल शिक्षा से ही समाज में समता, सहयोग व शोषण रहित व्यवस्था का निर्माण हो सकता है। वे शनिवार को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 102वें वार्षिक महोत्सव के दूसरे दिन गोरक्षा, स्वास्थ्य एवं कृषि सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे, जबकि समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के

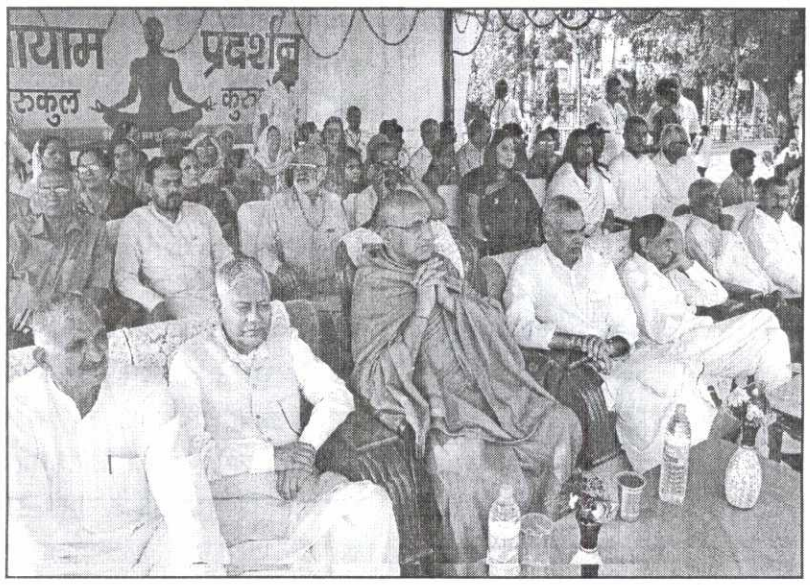

प्रधान आचार्य विजयपाल, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मंत्री मास्टर रामपाल विशिष्ट अतिथि तथा गोसेवा संघ हरियाणा के अध्यक्ष आचार्य योगेन्द्र सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. अवधेशानंद गिरि ने कहा कि संस्कारित शिक्षा मानव व राष्ट्र को स्थायित्व व पहचान प्रदान करती है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र प्राचीन संस्कृति के साथ आधुनिक शिक्षा का सामंजस्य स्थापित कर त्याग व समर्पण-भाव से संस्कारित शिक्षा प्रदान करने में जुटा हुआ है। यह एक ऐसी शिक्षण संस्था है, जिसने 102 वर्षों की लम्बी ऐतिहासिक यात्रा को पूर्ण कर शिक्षा को उच्च आयाम पर पहुँचाया है। राज्यसभा के पूर्व सांसद डॉ. रामप्रकाश ने कहा कि आज उचित मार्गदर्शन के बिना युवावर्ग दशा व दिशाहीन हो रहा है, जिसके कारण समाज पतन की ओर अग्रसर है। इसका एक मात्र उपाय गुरुकुल शिक्षा है, क्योंकि गुरुकुल शिक्षा विद्यार्थियों को सत्य, अनुशासित, सदाचारी व संस्कारित बनाने के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि गुरुकल शिक्षा आदर्श जीवन-मूल्यों से ओत-प्रोत है, जो विद्यार्थियों को सच्चाई, विनम्रता, करुणा व लोक-कल्याण की प्रेरणा देती है। यह गुरुकुल प्राचार्य डॉ. देवव्रत के अथक परिश्रम व गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी की दूरगामी सोच के कारण सफलता के नित नए आयाम स्थापित कर रहा है। डॉ. रामप्रकाश ने महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर संदेश देते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द एक सच्चे गुरु, भारत के निर्माता, धार्मिक पुनरुद्धारक, आडम्बर और अंधविश्वासों के घोर विरोधी थे। उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, दार्शनिक और सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य कर समाज को नयी दिशा प्रदान की, जो युगों-युगों तक मानव का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी। दयानन्द ने मानव को धर्म के वास्तविक रूप को जानने के लिए वेदों के मार्ग पर चलने का संदेश दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल ने कहा कि गाय मात्र पशु नहीं, बल्कि देश की माता है। हम जिस गोमाता का दूध, दही, घी खाकर इतने बड़े हुए है, उस गोमाता की सेवा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। उन्होंने गाय को देश व संस्कृति की धरोहर बताते हुए कहा कि गोहत्या धरती पर एक कलंक है।

शेष पृष्ठ 6 पर....

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का 102वां तीन दिवसीय वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्र गौरव चौधरी के पिता चौ. मेहरसिंह ने गुरुकुल प्रंबध समिति के प्रधान व प्राचार्य गुरुकुल के प्रतिभावान छात्रों को लैपटॉप प्रदान कर सम्मानित करते हुए।

कुरुक्षेत्र 19 अक्तूबर, 2014

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के प्रो. डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने कहा कि युवाओं का विराट व्यक्तित्व ही देश की पूंजी है। इसके बिना देश का उत्थान असंभव है, क्योंकि संस्कार ही युवाओं को सही दिशा दिखाते हैं। इसलिए हमारे जीवन में संस्कारित शिक्षा का सर्वोपरि स्थान है। वह रविवार को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 102वें तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य बनाना, आत्मनिर्भरता की भावना भरना तथा चरित्र-निर्माण कर संस्कारित बनाना है। संस्कारित शिक्षा से ही समाज में समता, सहयोग एवं शोषण रहित व्यवस्था का निर्माण हो सकता है। आज जीवन-मूल्यों का ह्रास तथा नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। ऐसे वातावरण में संस्कारित शिक्षा का महत्त्व एवं आवश्यकता और अधिक प्रासंगिक है। विद्यार्थियों में अच्छे गुणों एवं संस्कारों के लिए शिक्षक व अभिभावक स्वयं आदर्श प्रस्तुत करें तभी हम विद्यार्थियों को 'मनसा-वाचा-कर्मणा' से तैयार कर पायेंगे। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों में सुसंस्कारों के अन्तर्गत नैतिक शिक्षा, सदाचार व सज्जनता का जो पाठ बढ़ाया जाता है, उससे विद्यार्थियों का जीवन अनुशासित बनाता है। अनुशासन नैतिक शिक्षा की पहली सीढ़ी है। विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा रूपी हीरा प्राप्त करने के लिए बुराई को छोड़कर अच्छी संगति धारण करनी चाहिए। इससे विद्यार्थी न केवल अपने लक्ष्य को निर्धारित कर पायेंगे, बल्कि सफलता को भी प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने मुख्य अतिथि के समक्ष गुरुकुल की शैक्षिक उपलब्धियों व गतिविधियों का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के अनेक विद्यार्थी शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों व क्रीड़ा क्षेत्र में आज राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुके हैं। गुरुकुल के आठ छात्रों ने सीबीएसई दिल्ली द्वारा आयोजित जेईई की परीक्षा में उच्च स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल के पाँच छात्रों ने एनडीए की परीक्षा उत्तीर्ण कर गुरुकुल को गौरवान्वित किया है। इस प्रकार गुरुकुल के छात्र हर क्षेत्र में अग्रणीय भूमिका निभा रहे हैं। प्राचार्य ने बताया कि गुरुकुल प्रबंध समिति ने कन्या शिक्षा को सर्वोपरि मानते हुए चमन वाटिका इण्टरनेशनल कन्या गुरुकुल अम्बाला में स्थापित किया है, जिसमें एक जनवरी 2015 से प्रवेश आरंभ करने का निर्णय लिया है ताकि कन्याएँ संस्कारित शिक्षा से वंचित न रहें।

गुरुकुल के छात्रों ने **दंगा-शक्ति** नाटक का मंचन कर सभी दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। गुरुकुल प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी व आचार्य देवव्रत ने मुख्य अतिथि प्रो. डॉ राजेन्द्र विद्यालंकार को गुरुकुल की ओर से शॉल, उपहार व स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

thearyasamaj.org

दर्शन-दिग्दर्शन

गतांक से आगे....

प्रमेय-प्रमाणों से जिनका पता, ज्ञान किया जाता है, वे **प्रमेय** कहलाते हैं। अत: यहां प्रमेय के रूप में पांच भूतों, शरीर-इन्द्रिय, मन और आत्मा आदि का वर्णन आया है। हां, इनमें से केवल आत्मा का ही कुछ विस्तृत विचार इस दर्शन में है। निर्णय सदा सन्देह उठने या जिज्ञासा पर दृष्टान्त आदि से किया जाता है। न्यायदर्शन में निर्णय की प्रक्रिया की दृष्टि से वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रह स्थान का विशेष वर्णन है। इनमें से अन्तिम हेत्वाभास आदि चारों का भेद उपभेद सहित विवेचन है। इन चारों का अधिकतर दूसरे को उलझाने, हराने के लिए ही प्रयोग किया जाता है। यहाँ बात का बतंगड़ बनाना, शब्दजाल ही होता है। इस चर्चा से यह दर्शन आज के न्यायालयों की प्रक्रिया का स्मरण करा देता है। इस दर्शन में यह सारी चर्चा पहले सोलह पदार्थों के नाम बताकर, फिर उनके लक्षण (=पहचान) दर्शा कर और अन्त में इनकी पूरी परीक्षा की गई है। हाँ, यहाँ कर्मफल जैसे कुछ विषय अवान्तर चर्चा में चर्चित हुए हैं। इस न्यायदर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम हैं, जिन को अक्षपाद भी कहते हैं।

सांख्य-सांख्य सूत्रों के निर्माता महर्षि कपिल हैं। इस दर्शन को प्राचीन रसायन शास्त्र भी कह सकते हैं, क्योंकि पृथिवी आदि पांच भूत तथा इन से बनने वाले भौतिक पदार्थ किस मूलतत्त्व से किन परिस्थितियों में परिणत होकर यहां तक पहुंचते हैं। इसका विचार ही इस दर्शन का प्रतिपाद्य है।

सांख्य का एक अर्थ जहाँ (प्रकृति-पुरुष का) सम्यक् ज्ञान है, जो कि सम् उपसर्ग पूर्वक ख्या (प्रकथने) से सिद्ध होता है, वहाँ यह संख्या शब्द का तद्धित रूप होने से संख्या के अर्थ का ज्ञापक है। इस दर्शन में पच्चीस तत्त्वों का वर्णन है, जो कि अन्य दर्शनों से अधिक संख्या में हैं। सांख्य के अनुसार प्रकृति, महत्, अहंकार, (पांच) भूत, पुरुष आदि का समूह, परिणाम रूप ही यह सारा संसार है।

संसार में भौतिक पदार्थ अनेक रूपों में हमें बनते दिखाई देते हैं। ये जिस-जिस मूलतत्त्व से जिस प्रकार से जब बनते हैं। यह समझाना ही सांख्यदर्शन का कार्य है। यहाँ इस मूलतत्त्व को प्रकृति नाम दिया गया है, क्योंकि प्रकरोति इति प्रकृति:-अर्थात् यह मूलतत्त्व इस समय इस रूप में परिणत होकर विकृति के रूप में महत्, अहंकार, पंचतन्मात्रा की स्थिति में से होकर पंचभूतों के रूपों में पहुँचता है। जैसे कि वृक्ष भूमि के नीचे पड़े-पड़े समय के साथ कोयले आदि रूप में परिवर्तित होते हैं। इस निर्माण की प्रक्रिया को प्रकट करने के लिए ही मूलतत्त्व का नाम **प्रकृति** है। सभी भौतिक पदार्थ फिर कभी न कभी किसी कारण से ओझल, नष्ट, अदृश्य हो जाते हैं। इस स्थिति को दर्शाने के लिए इस मूलतत्त्व का दूसरा नाम **प्रधान** भी है। जिसका भाव है, सारे पदार्थ जिस में (प्रधीयते, प्रलीयते यस्यां) क्रमश: इस प्रकार समा, सिमट जाते हैं जैसे कि मिट्टी में मिल जाना कहा जाता है। अत: संसार का बनना, बिगड़ना सांख्य समझाता है।

इस दर्शन का प्रारम्भ दु:खों की चर्चा से होता है, क्योंकि सभी प्राणी आध्यात्मिक (=शरीर में होने वाले रोगजन्य दु:ख, मानसिक व्यथा), आधिभौतिक (=दूसरे प्राणियों से होने वाले कष्ट, क्लेश) और आधिदैविक (=अग्निकाण्ड, जल जन्य बाढ़, आदि के कारण होने वाले) दु:खों से पीड़ित हैं। अत: इन दु:खों से बचने का उपाय सामने आना चाहिए। इन दु:खों से बचे रहने में ही किसी के जीवन की सार्थकता, सफलता है। इस दर्शन के अनुसार वह प्रकृति-पुरुष के सही ज्ञान से ही हो सकता है और यही वस्तुत: तत्त्वज्ञान है, उसी का नाम सांख्य है। अन्यथा मिथ्याज्ञान से जिस प्रकार दोष, विकार, दु:ख, क्लेश होते हैं, वे सभी प्रतिदिन सभी के सामने आते रहते हैं।

योगदर्शन-योगदर्शन के रचयिता पतञ्जलि महामुनि हैं। सामान्यत: योग शब्द जोड़ के अर्थ में आता है, जो कि गणित की एक प्रक्रिया है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी विविध वस्तुओं के योग से औषध तैयार की जाती है। इसी अर्थ के आधार पर ईश्वर-जीव के योग (=दर्शन, अनुभव की प्रक्रिया) को इस शास्त्र का लक्ष्य आदिष्ट किया जाता है। योगदर्शन में योग शब्द विशेष रूप से समाधि=एकग्रता के रूप में उपदिष्ट है। अत एव वहाँ चित्त की पाँच वृत्तियों के स्वरूप के साथ उनके निरोध के अनेक उपाय बताए गए हैं। साधकों के भेद से इसको तीन रूपों में समझाया गया है। विशेष (निरुद्ध), मध्यम (एकाग्र) और सामान्य (=विक्षिप्त) रूप में प्राप्त होने वाले साधकों की दृष्टि से यह चर्चा है। समाधिपाद में प्रतिपादित प्रक्रिया विशेष साधकों के लिए है। तदनन्तर साधनपाद के 2,1 में आया '(तप: स्वाध्यायेश्वर-प्रणिधानानि) क्रियायोग:' मध्यम स्थिति के साधकार्थ है और अष्टांग वाला विस्तृत वर्णन सामान्य स्थिति के साधकों के लिए सरल पथ है।

योगदर्शन का समालोचनात्मक अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट होती है कि योग की प्रक्रिया के द्वारा आत्मानुभूति होती है। तभी तो वहाँ 'तदा द्रष्टु: स्वरूपेऽवस्थानम्' 1,3 अर्थात् जब योग विधि के अनुष्ठान से चित्त की वृत्तियां निरुद्ध हो जाती हैं, तब चित्त के द्रष्टा=जीवात्मा का अपने स्वरूप में टिकाव होता है। द्रष्टा, दृश्य शब्दों का योगदर्शनकार ने विवेचन किया है, वहाँ जीव के अर्थ में ही द्रष्टा शब्द निर्दिष्ट है। योग के चतुर्थ पाद का नाम कैवल्य है, कैवल्य शब्द केवल की स्थिति से तद्धित में बनता है, अर्थात् अकेलेपन की (प्रकृति रहित) स्थिति। तभी तो लिखा है—'पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसव: कैवल्यम् स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्ति:' 4,34 अर्थात् कैवल्य का एक अर्थ जहाँ यह है कि सत्-रज-तम गुणों का क्रियाशील न होना, वहाँ कैवल्य का दूसरा अर्थ है—चेतनशील का अपने आपे में टिकना। क्रमश:....

—भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,
B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

चुनाव में डेरा प्रभाव

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

अभी हाल में विधानसभा चुनाव सम्पन्न हुए। लोकसभा चुनाव में हरयाणा में ऋषि दयानन्द का नाम लेने वाले प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को विधानसभा चुनाव में महामतिभ्रम हुआ जो वे ऋषि दयानन्द की जगह सिरसा डेरे के राम रहीम का राग अलापने लगे। दोनों व्यक्तियों में क्या अन्तर है यह बात मोदी जी व उनके राजनेताओं को बताने की आवश्यकता नहीं है। यदि हम कहें कि राजनीति में चालाकी से काम लेना पड़ता है, तो भी ऐसा कहकर हम मोदी जी के इस कदम को ठीक नहीं बता सकते। नैतिक मूल्यों को ताक पर रखकर सामाजिक हानि जिससे होती है ऐसी चालाकी मतिभ्रम या ठगी की श्रेणी में आती है। इस संदर्भ में अंग्रेजी के दो शब्द होते हैं, 'Clever' व 'Cunning'। हम तो इसे मोदी जी की 'Cunningness' कहेंगे। क्या उन्हें नहीं पता कि इस डेरा प्रमुख की गतिविधियाँ संदिग्ध रही हैं? उस पर कोर्ट में केस चल रहे हैं? चिन्तन का विषय है कि मीडिया किस दिशा में जा रहा है। आशाराम की गिरफ्तारी पर मीडिया में न्यूज चैनलों पर वाद-विवाद में मीडिया ने आशाराम की खूब धज्जियां उड़ाई, अच्छी बात है। लेकिन राम रहीम द्वारा भाजपा के समर्थन को खूब महिमा मण्डित किया गया। उस समय केवल यह दिखाया गया कि डेरा के समर्थन से भाजपा को मजबूती मिलेगी। यह बात प्रमुखता से क्यों नहीं दिखाई गई कि भाजपा ने एक विवादित डेरा प्रमुख का समर्थन लिया है? इस पर वाद-विवाद क्यों नहीं करवाया गया? हाल यह है कि आज पैसे के बल पर ऋषि दयानन्द जैसे राष्ट्र निर्माता सन्त को टी.वी. चैनल के माध्यम से रामपालदास गालियाँ दे रहा है। मीडिया वाले पत्रकार छत्रपति की शहादत भी भूल गए।

आचार्य अभय आर्य

मोदी जी व भाजपा के नेताओं को अब डेरा प्रभाव का भी विश्लेषण करना चाहिए। यदि डेरा प्रमुख अपना छोड़ता तो भाजपा को सिरसा के पाँचों विधानसभा क्षेत्रों में हार का मुँह न देखना पड़ता। सब अपने-अपने गाँव का विश्लेषण करेंगे तो पायेंगे कि ज्यादा संख्या अब भी उन लोगों की है जो किसी गुरुडम के चक्कर में नहीं फँसे हुए। जब भी आर्यसमाज कोई बड़ा आन्दोलन करता है तो यही संख्या उसमें निर्णायक भूमिका निभाती है। इन्हीं लोगों की भावना उद्वेलित करके श्री नरेन्द्र मोदी हरयाणा में भाजपा को सफलता दिलाने में कामयाब रहे। लेकिन वे इस तथ्य को भुलाकर एक गलत विचार को समाज में फैला गए। मोदी स्वयं भूल गए कि मुस्लिम वोटों का कम प्रतिशत मिलने पर भी भाजपा जीत गई। यह इस देश के लोकतन्त्र का अब तक सौभाग्य है कि चुनाव की दिशा मत-पन्थ द्वारा तय नहीं होती। यदि कुछ राज्य ऐसे हैं, तो वे राजनेताओं की गलत नीतियों के कारण। क्या ये राजनेता सभी राज्यों को ऐसा बनाकर छोड़ेंगे। कभी संघ प्रमुख बयान देते हैं कि इस देश में रहने वाले सब 'हिन्दू' हैं। फिर स्पष्टीकरण देना पड़ता है कि यह कोई अलग 'धर्म' नहीं है। वे ऋषि दयानन्द की आवाज को खुलकर क्यों नहीं कह व कर पा रहे। राष्ट्रहित पर स्वयं का अस्तित्व भारी पड़ रहा है।

आर्यसमाज से जुड़े चिंतक प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री हरयाणा को डेरे के चुनाव में प्रभाव के संदर्भ में पत्र अवश्य लिखें, जिससे किसी प्रकार का भ्रम न रहे।

thearyasamaj.org

मातृभाषा हिन्दी का सम्मान करो

भारत के नर-नारी मिल, भारत की ऊँची शान करो।
अपनी प्यारी मातृभाषा-हिन्दी का सम्मान करो॥

सकल देश भारत में मित्रो! हिन्दी बोली जाती है।
काश्मीर को महाराष्ट्र से, हिन्दी सुनो मिलाती है।
देश की खातिर जीयो मरो सब, हिन्दी पाठ पढ़ाती है।
प्यार-प्रेम की गंग बहाओ, सुख का मार्ग दिखाती है।
मानव हो मानवता धारो, धर्म-कर्म का ज्ञान करो।
अपनी प्यारी मातृभाषा-हिन्दी का सम्मान करो॥

नानक, तुलसी, सूरदास ने, हिन्दी को था अपनाया।
थे रसखान कवि सच्चे, हिन्दी का गौरव दर्शाया।
कबीरदास अरु रविदास ने, हिन्दी की महिमा गाई।
हिन्दी का गुणगान रात-दिन, करती थी मीराबाई।
क्षेमकरण से कवि बनो तुम, जगती का कल्याण करो।
अपनी प्यारी मातृभाषा-हिन्दी का सम्मान करो॥

जगद्गुरु ऋषि दयानन्द ने, हिन्दी का प्रचार किया।
आर्यजनों की आर्यभाषा, हिन्दी को शुभ नाम दिया।
हिन्दी में सब ग्रन्थ लिखे थे, ऋषि थे वैदिक प्रचारी।
मानवता के पूर्वज थे वे, दयासिन्धु थे न्यायकारी।
अपनी भाषा-वेश सुधारो, भारत का उत्थान करो।
अपनी प्यारी मातृभाषा-हिन्दी का सम्मान करो॥

नाथूराम शर्मा शंकर अरु अयोध्यासिंह उपाध्याय सुनो।
प्रकाश चन्द्र हरिवंशराय बच्चन, करते थे न्याय सुनो।
माखनलाल चतुर्वेदी थे, कवि निराला लासानी।
मैथिलीशरण सियारामशरण, दिनकर की कविता मनमानी।
चन्द्र कवि की गंग कवि की, भूषण की पहचान करो।
अपनी प्यारी मातृभाषा-हिन्दी का सम्मान करो॥

सुभद्रा कुमारी और महादेवी जी को, हिन्दी थी प्यारी।
सती महाश्वेता देवी, हिन्दी की समर्थक थी भारी।
जो बोलोगे वही लिखोगे, वही पढ़ोगे हिन्दी में।
अंग्रेजी से अधिक ज्ञान तुम, प्राप्त करोगे हिन्दी में।
'**नन्दलाल निर्भय**' हिन्दी में, नित अपने व्याख्यान करो।
अपनी प्यारी मातृभाषा-हिन्दी का सम्मान करो॥

-पं० नन्दलाल 'निर्भय' पत्रकार, भजनोपदेशक आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन

आर्य निवास नलवा (हिसार) में दिनांक 2.10.2014 को स्व० माता पनमेश्वरी देवी की चौथी पुण्यतिथि पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही द्वारा यज्ञ किया गया। माताजी को श्रद्धांजलि दी गई। स्नेही जी ने महात्मा गांधी व पूर्व प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के जीवन व कार्यों पर प्रेरणादायक संस्मरण सुनाए। यज्ञ पर पधारे नर-नारियों से उपरोक्त महापुरुषों के जन्म दिवस पर अपना आत्मनिरीक्षण करके सामाजिक बुराइयों से कोसों दूर रहना चाहिए और कोई भी नेक कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए।

इस अवसर पर श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्रीमती सरोज आर्या, श्रीमती बिमला आर्या, श्रीमती केला देवी, उर्मिल आर्या, पवन कुमार आर्य, बृजभान मलिक एसडीओ, भलेराम आर्य, युद्धवीर आर्य आदि उपस्थित थे।

-मंत्री आर्यसमाज नलवा (हिसार)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी	8 से 9 नवम्बर 2014
2.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	14 से 16 नवम्बर 2014
3.	आर्यसमाज बसई जिला गुड़गांव	14 से 16 नवम्बर 2014
4.	आर्यसमाज जीन्द शहर	21 से 23 नवम्बर 2014

—सभामन्त्री

बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम

दिनांक 4-5 अक्तूबर 2014 को सैक्टर-7 गुड़गांव में बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी वैदिक योगाश्रम भऊ आर्यपुर रोहतक के सान्निध्य में प्रथम बृहद् यज्ञ हुआ जिसमें अनेक शिक्षाविद् इंजीनियर आदि यजमान बने। आचार्य जी ने संस्कारों पर बोलते हुए कहा कि मानव के निर्माण का कार्य गर्भस्थ बालक से ही प्रारम्भ हो जाता है इसीलिए महर्षि दयानन्द जी ने संस्कारविधि में सारा विज्ञान लिखा है। कार्यक्रम में अनेक युवाओं को यज्ञोपवीत भी प्रदान किये गये।

गुरुकुल शिक्षा के बिना सामाजिक.... पृष्ठ 4 का शेष....

इसलिए हमें गाय का संरक्षण व संवर्धन कर गोहत्या पर अंकुश लगाना चाहिए, तभी हमारा देश व संस्कृति बच पाएगी। उन्होंने कहा कि गाय के गोबर व मूत्र के लेप से त्वचा व रक्त विकार दूर होता है। इसमें रोग प्रतिरोधक की अपार शक्ति है। गाय हमारे लिए एक उपयोगी पशु है, इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि हम गाय की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहें। आचार्य विजयपाल ने गुरुकुल द्वारा प्रकाशित तथा डॉ. श्यामलाल शर्मा द्वारा सम्पादित वार्षिक स्मारिका का विमोचन भी किया।

गोसेवा संघ हरयाणा के अध्यक्ष आचार्य योगेन्द्र ने कहा कि गाय से मनुष्य का जन्म-जन्म का नाता है। देश में गोमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा मिलने से ही देश पूर्णरूप से खुशहाल, सम्पन्न व उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगा। उन्होंने गाय की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि युवाओं को गोसेवा का बीड़ा उठाना चाहिए। यदि गाय बचेगी तो देश का अस्तित्व बचेगा। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक को एकजुट होकर गाय की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए, चाहे इसके लिए हमे प्राणाहुति ही क्यों न देनी पड़े। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मंत्री मास्टर रामपाल ने कहा कि गाय का दूध, घी, मूत्र व गोबर मानव के विभिन्न असाध्य रोगों में रामबाण सिद्ध हो रहे है। मानव फिर भी गाय की बेकद्री कर रहा है, जो कि चिन्ता व चिन्तन का विषय है।

गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने मुख्य अतिथि के समक्ष गुरुकुल की शैक्षिक उपलब्धियों व गतिविधियों का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि गुरुकुल में अनेक प्रकल्प चल रहे हैं, जिनमें शिक्षा, चिकित्सा, समाज-सेवा, जैविक कृषि, आयुर्वेदिक फार्मेसी, उन्नत गोपालन तथा चारित्रिक-निर्माण इत्यादि शामिल हैं। गुरुकुल की गोशाला भारतीय नस्ल सुधार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है, जो दुग्ध-उत्पादन के क्षेत्र में एक मिसाल है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल ने किसानों को रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक खाद तैयार कर कृषि करने के लिए प्रोत्साहित किया है, ताकि वे कर्ज के बोझ से मुक्त रहें। गुरुकुल संस्कारित शिक्षा प्रदान कर विद्यार्थियों को शालीन व्यक्ति बना रहा है, प्राचार्य ने बताया कि 15 ब्रह्मचारियों ने आर्यसमाज का प्रचार करने का संकल्प लिया है ताकि वे समाज को जागरूक कर अंधविश्वासों से मुक्ति दिला सकें। गुरुकुल के अनेक छात्र विदेशों में उच्च पदों पर कार्यरत हैं जिन पर समस्त गुरुकुल परिवार को गर्व है। गुरुकुल प्रबंध समिति ने विद्यार्थियों के लिए गुरुकुल परिसर में ही आईआईटी, पीएमटी व एमबीए प्रशिक्षण की व्यवस्था की है, ताकि वे कम शुल्क में अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने लक्ष्य को हासिल कर सकें। उन्होंने बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के विद्यार्थी शिक्षा व क्रीड़ा क्षेत्र में आज राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित कर रहे हैं।

गुरुकुल के विद्यार्थियों ने मुख्य अतिथि के समक्ष रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर समा बांध दिया। गुरुकुल प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, डॉ. देवव्रत आचार्य ने स्वामी डॉ. अवधेशानंद गिरि, डॉ. रामप्रकाश, आचार्य विजयपाल, आचार्य योगेन्द्र व मास्टर रामपाल को गुरुकुल की ओर से शाल, च्यवनप्राश व स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर गुरुकुल प्रबन्ध-कर्त्री समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य, उपप्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के प्रोफेसर डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, प्रेस प्रवक्ता डॉ. श्यामलाल शर्मा, अध्यापकवृन्द व अभिभावकगण आदि उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

आर्यसमाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम अलीगढ़ का

राष्ट्रीय शौर्य पर्व विजय दशमी पर वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग अलीगढ़ का राष्ट्रीय शौर्य पर्व विजय दशमी पर आयोजित वार्षिकोत्सव शुक्रवार 3 से सोमवार 6 अक्टूबर 2014 तक परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और विद्वानों के आशीर्वाद एवं श्रद्धालु जनता व पदाधिकारियों के सहयोग से बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

उत्सव की भव्यता हेतु पूरे महानगर में बैनर एवं बड़े-2 होर्डिंग लगाये गये तथा जनपद की समस्त पंजीकृत आर्यसमाजों को पत्र द्वारा सूचित किया गया तथा प्रिंट एवं इलैक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा भी अधिकाधिक प्रचार-प्रसार किया गया। सारे महानगर में वेदप्रचार की एक लहर दौड़ रही थी। चारों ओर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव की चर्चा थी। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में तीनों ही वर्ग यथा-बाल, युवा व वृद्ध, महिला एवं पुरुषों ने समान रूप से बढ़-चढ़कर भाग लिया। सन् 1974 से स्थापित इस आर्यसमाज का यह इतना विशाल पहला उत्सव था जिसकी प्रत्येक जन मानस ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और कार्यक्रम को सराहा तथा सैद्धान्तिक प्रचार होने से लोगों ने अपने को बदलने का संकल्प भी लिया।

कार्यक्रम 3 अक्टूबर को प्रातः 7:30 बजे यज्ञ से पं. सुरेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ जिसके चारों दिन के यजमान क्रमशः श्री सी.ए. सचिन आर्य, डॉ. विजयपाल सिंह, अरविन्द बत्रा, गिर्राज किशोर आर्य, सी.ए. अनिल वार्ष्णेय, तरुन चौहान, जगदीश यादव एवं विनोद कुमार आर्य सपत्नीक रहे। तत्पश्चात् सामूहिक वैदिक संध्या तथा पं. राजवीर शास्त्री ने ईश महिमा का भजन प्रस्तुत किया इसके बाद आचार्य ब्रजेश शास्त्री ने यज्ञ की वैज्ञानिक व्याख्या कर उपस्थित जन समूह की वाह-वाही लूटी। यही क्रम अगले चार दिन क्रमशः चलता रहा। सायंकालीन सत्र मध्यान्ह 4 बजे से प्रारम्भ होकर रात्रि 9 बजे तक प्रतिदिन चलता रहा जिसमें प्रतिदिन ईश-भजन, मधुर वेदप्रवचन के अतिरिक्त अन्य अनेक कार्यक्रम भी समय-समय पर होते रहे। प्रत्येक दिन दिवस आयोजन मनाया गया जिसमें अलग-अलग चार दिवस में अलग-अलग 4 महानुभावों को उनके द्वारा किये गये समाज में अद्वितीय कार्यों के लिए उन्हें अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया। जिसमें 3 अक्टूबर आर्य युवक दिवस पर श्री योगेश यादव, 4 अक्टूबर आर्य राष्ट्र दिवस पर श्री सतीश गौतम सांसद अलीगढ़, 5 अक्टूबर आर्य पितृ दिवस पर पं. शिवस्वरूप शर्मा संरक्षक आर्यसमाज एवं 6 अक्टूबर आर्य मातृदिवस पर श्रीमती उषा गर्ग को प्रसस्ति-पत्र भेंट कर सम्मनित किया गया।

इस चार दिवसीय कार्यक्रम को व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का नाम दिया गया। चार दिवसीय कार्यशाला के चारों दिनों के विषय अलग-अलग थे यथा-प्रथम दिन व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में वेदसम्मत दिशाहीन छात्र/छात्राओं, युवक/युवतियों का चरित्र निर्माण आधुनिक परिवेश में। द्वितीय दिन व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में बढ़ते सामाजिक अपराध एक राष्ट्रीय समस्या पर वैदिक चिन्तन। तृतीय दिन व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में ईश्वर का वास्तविक वैदिक स्वरूप एवं बुजुर्गों अथवा पितृजनों द्वारा नई युवापीढी को आध्यात्मिक वैदिक सम्पत्ति-सुसंस्कारों को देने में कोताही। चतुर्थ दिन व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में नारी श्रेष्ठ तो समाज श्रेष्ठ पर वैदिक विचार।

उपरोक्त सभी विषय दिवसानुसार हमारे पूज्य आगन्तुक महोपदेषक आचार्य आर्यनरेश हिमाचल प्रदेश, आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री कनकपुर, आचार्य ब्रजेश जी गोवर्धनपुर, आचार्य ब्रजेश शास्त्री गाजियाबाद एवं पं. राजवीर शास्त्री दिल्ली ने बहुत ही सरल, सरस, सारगर्भित, अनुकरणीय एवं सैद्धान्तिक बनाते हुये जनता-जनार्दन के चित्त पर छाप दिये जिसके परिणाम स्वरूप प्रतिदिन हजारों की भीड़ के कारण आर्यसमाज प्रांगण छोटा पड़ गया। सैकडों लोग घण्टों खड़े होकर प्रवचन सुनते रहे।

दिनांक 5 अक्टूबर को सायंकालीन सत्र में नेत्रदान जागरुकता कार्यक्रम नेत्रकोश संस्थान जवाहरलाल नेहरू मेडीकल कॉलिज ए.एम.यू. अलीगढ़ के सहयोग से हुआ जिसमें अलीगढ़ आई वॉलिन्टियर एसोसिएसन 'आइवा' के पदाधिकारी श्री अनिल वार्ष्णेय ने नेत्रदान के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा नेत्रदान संकल्प पत्र भी लोगों ने भरकर वहीं पर जमा किये।

दिनांक 6 अक्टूबर को सायंकालीन सत्र में जनपद अलीगढ़ के समस्त दैनिक यज्ञ कर्त्ताओं को 'अग्निहोत्री' की उपाधि से सम्मनित किया गया जिसमें लगभग 96 लोग 'अग्निहोत्री' की उपाधि से नवाजे गये। इस कार्यक्रम की भी जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसी दिन नशामुक्ति अभियान के तहत इं. सत्यवीर सिंह ने शराब के बारे में राज्य व केन्द्र सरकार के सरकारी आंकड़े प्रस्तुत कर जनता को लाभ-हानि से परिचित कराया। इसी दिन श्री सुखदेव शर्मा इन्दौर प्रकाशक वैदिक संसार मासिक का भी अभिनन्दन समाज के पदाधिकारियों ने किया।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन समाज के मन्त्री डॉ. पपेन्द्र आर्य ने किया तथा चारों दिन दोनों समय ऋषिलंगर की समुचित व्यवस्था रही। अन्त में आचार्य आर्यनरेश का मुख्य प्रवचन हुआ और सभामन्त्री डॉ. पपेन्द्र आर्य ने सभी विद्वानों, पदाधिकारियों, सदस्यों एवं श्रोताओं का आभार प्रकट किया तथा प्रधान श्री रामदीन आर्य पुरुषार्थी के सहयोग की सराहना की।

अन्त में शान्तिपाठ के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर डॉ. जयसिंह सरोज, पं. शिवस्वरूप शर्मा, डॉ. पपेन्द्र आर्य, डॉ. खुशपाल, डॉ. विजयपाल सिंह, योगेश शर्मा, रामदीन आर्य, आदेशपाल सिंह, इं. शेरसिंह आर्य, प्राचार्य इन्द्रपाल सिंह, देवनारायण भारद्वाज, बाबूसिंह, इं. के.सी. शर्मा, सुरेन्द्रपाल आर्य, राजेन्द्र शर्मा, होडिल सिंह तोमर, रामसिंह राठौर, डॉ. यशपाल रावल, अनिल चौहान, जयप्रकाश, रमेश रावत, विनोद आर्य, वैद्य नन्दकिशोर आर्य, गंगास्वरूप गोयल, श्रीमती शशिप्रभा गोयल, रत्नेश भैयाजी, मनोरमा देवी आर्य, विनीता आर्य, स्वतः आर्य, मुन्नी आर्य, गुलशन सचदेव आदि मौजूद रहे।

-डॉ0 पपेन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग, अलीगढ़ उ0प्र0-09319788727

राष्ट्रीय मेला दशहरा कोटा में आकर्षक का केन्द्र है वैदिक साहित्य प्रचार प्रदर्शनी

कोटा, 18 अक्टूबर। नव पीढ़ी को आर्यसमाज के वैदिक सिद्धांतों से अवगत कराने का सर्वोत्तम माध्यम है आर्यसमाज महर्षि दयानन्द चित्र प्रदर्शनी। उक्त विचार अमरोहा उत्तर प्रदेश से पधारे आर्य विद्वान डॉ. अशोक आर्य, प्रधान सम्पादक आर्यवर्त केसरी ने राष्ट्रीय मेला दशहरा कोटा में आर्य समाज द्वारा लगाई गई चित्र प्रदर्शनी के अवलोकन के अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि ऐसे प्रदर्शनों से समाज एवं जनसामान्य को हमारी वैदिक सम्पदा व संस्कृति के प्रति गौरव की अनुभूति होती है। प्रदर्शनी में बनाई गई लघु यज्ञ शाला की प्रशंसा की। इस अवसर पर आर्यावर्त केसरी की साहित्य सम्पादक डॉ. बीना रस्तगी ने प्रदर्शनस्थल पर वेद, यज्ञ, उपनिषद्, आयुर्वेद, महापुरूषों के जीवन चरित्र से सम्बंधित साहित्य का अवलोकन किया तथा इस प्रदर्शनी के सफल एवं परम्परागत आयोजन के लिए आर्यसमाज कोटा के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद व्यक्त किया।

आर्यसमाज जिलासभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने आगन्तुक विद्वानों को बताया कि इसके माध्यम से आर्य समाज पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओ, सामाजिक कुरीतियां, जल है तो कल है व वृक्ष हमारे मित्र, नेत्रदान, रक्तदान, नशा मुक्ति आदि सामाजिक विषयों के प्रति जागरूक करता रहा है।

इस अवसर पर वेद प्रचार समिति कोटा के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने जानकारी देते हुए कहा कि इस प्रदर्शनी को कोटा की समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से विगत 18 वर्षों से लगातार राष्ट्रीय मेले दशहरा में लगाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त डीएवी स्कूल कोटा एवं स्काउट गाइड (अलनिया) कोटा में भी इस प्रदर्शनी को लगाया गया है।

इस अवसर आर्य समाज से चन्द्रमोहन कुशवाह, श्योराज वशिष्ठ, मुकेश चड्ढा, रामप्रसाद याज्ञिक, श्रीचंद गुप्ता, प्रभूसिंह कुशवाह, औंकार सिंह, क्षेत्रपाल आर्य, उमेश कुर्मी सहित अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

-प्रभुसिंह कुशवाह, मंत्री

thearyasamaj.org

वीतराग महात्मा प्रभुआश्रित साधनास्थली

वैदिक साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक-124001 फोन-01262-253214

अथर्ववेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

रविवार 26 अक्टूबर 2014 से बृहस्पतिवार 6 नवम्बर 2014 तक

सभी गुरुभक्तों एवं यज्ञप्रेमियों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर, रोहतक में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया जा रहा है। **इस शुभ अवसर पर आप सब सपरिवार एवं मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।**

यज्ञ ब्रह्मा - **आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय जी**

आमन्त्रित विद्वान् - **आचार्य सोमदेव (अजमेर)**
आचार्य जयेन्द्र शास्त्री, गुरुकुल नोएडा
स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी,
स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी,
स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती,
डॉ. राज बुद्धिराजा।

भजनोपदेशक - **श्री ओममुनि, पं० सुरेन्द्रपाल**

रविवार 26 अक्टूबर 2014 यज्ञ प्रारम्भ-3 से 6 बजे सायं
सोमवार 27 अक्टूबर 2014 से बुधवार 5 नवम्बर 2014 तक
प्रातः 6 से 9 बजे तक - यज्ञ, भजन, उपदेश
सायं 3 से 6 बजे तक - यज्ञ, भजन, उपदेश
गायत्री यज्ञ मंगलवार 4 नवम्बर 2014 प्रातः 10.30 से 12.30 बजे तक
बुधवार 5 नवम्बर 2014 भजन संध्या सायं 8 से 10 बजे तक
पंडित सुरेन्द्र पाल
गुरुकुल कुटिया मेला-बुधवार 5 नवम्बर 2014 प्रातः 10 बजे से
पूर्णाहुति तथा आशीर्वाद-वीरवार 6 नवम्बर 2014
यज्ञ, भजन, उपदेश-प्रातः 7 बजे से दोपहर 1 बजे तक
तत्पश्चात् ऋषिलंगर

-वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री, वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर, रोहतक

ईश्वर को मानने वाले अधिक और.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

लिए कहा या करने की आज्ञा नहीं दी उस कार्य को करना पाप है। जैसे चोरी करना, मादक पदार्थों का सेवन, परस्त्रीगमन, दूसरे के धन को हड़पना आदि-आदि। ये पाप मनुष्य कब करता है, जब वह ऐसे किस्से-कहानियां सुनता है कि—

टका धर्मष्टका कर्म टका हि परमं पदम्।
यस्य गृहे टका नास्ति हा! टकाटकटकायते॥

तू लड़का है, संसार की बातें नहीं जानता। देख टके के बिना धर्म, टका के बिना कर्म, टका के बिना परमपद नहीं होता। जिसके घर में टका नहीं है, वह हाय टका! टका-टका करता-करता उत्तम पदार्थों को टक-टक देखता रहता है कि हाय! मेरे पास टका होता तो इस पदार्थ को मैं भोगता।

आज सब जगह केवल टके का ही खेल नजर आता है। टका मिलना चाहिये चाहे धर्म का प्रपंच रचने से मिले, चाहे रिश्वतखोरी से मिले, चाहे सामान में मिलावट से मिले, चाहे चोरी या छीना-झपटी से मिले, चाहे हेराफेरी से मिले, चाहे गैरकानूनी कार्यों के करने से मिले। कहने का भाव यह है कि हर आदमी टके की ओर ही टकटकी लगाये बैठा है, इसके लिए उसे कुछ भी करना पड़े तो कर डालता है, जेल जाना पड़े तो भी जेल जाने को तैयार है।

कुछ तो क्राइम करते डरते ही नहीं, वे कहते हैं कि जेल होगी तो कम से कम रोटी, कपड़ा और रहने को स्थान तो मिलेगा। दर-दर धक्के खाने, भूखे मरने से तो अच्छा ही है। बहुत से लोगों को कहते सुना है कि कलियुग है। कलियुग नाम काल का है। काल निष्क्रिय होने से कुछ धर्माधर्म के करने में साधक-बाधक नहीं है। कलियुग न हो तो कोई संसार में धर्मात्मा न होता। ये सब संग के दोष हैं, स्वाभाविक नहीं। कलियुग पुण्य करने वाले को क्यों नहीं रोकता? क्या कलियुग पाप करने को ही कहते हैं?

धर्म-शिक्षा में विद्यालय का कीर्तिमान्

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत में प्रतिवर्ष आर्य विद्या परिषद् हरयाणा द्वारा धर्म शिक्षा की परीक्षा आयोजित की जाती है जिसमें पंचम कक्षा से लेकर नवम कक्षा तक के सभी विद्यार्थी अनिवार्य रूप से भाग लेते हैं। इन परीक्षाओं को धर्म-प्रवेशिका, धर्म-भूषण और धर्माधिकारी नाम से पुकारा जाता है। इन परीक्षाओं के लिए सभा की ओर से वैदिक सिद्धान्तों से परिपूर्ण सुयोग्य विद्वान् लेखक डॉ० रणजीतसिंह जी आर्य द्वारा लिखित धर्मशिक्षा की पुस्तकें धर्म-प्रवेशिका, धर्म-भूषण तथा वैदिक सिद्धान्त सार विद्यालयों में नियुक्त की गई हैं जिनमें बच्चों को प्रतिभा तथा योग्यतानुसार सम्पूर्ण तथा विशुद्ध वैदिक ज्ञान और वैदिक सिद्धान्त परिपूरित हैं। विद्यालय के सभी बच्चे इन पुस्तकों को श्रद्धा से पढ़ते हैं तथा आचरण में लाते हैं। इन परीक्षाओं में बच्चे अति उत्साह तथा श्रद्धा से भाग लेते हैं। इस वर्ष बच्चों ने अत्यधिक परिश्रम किया तथा इन परीक्षाओं का परिणाम आशातीत तथा अति उत्तम रहा। इन परीक्षाओं में लगभग 650 छात्रों व छात्राओं ने भाग लिया जिनमें से लगभग 150 छात्र-छात्राओं ने 60 अंकों से अधिक अंक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं विद्यालय का गौरव तथा मान-सम्मान बढ़ाया। लगभग 80 बच्चों ने 90 से 100 अंक प्राप्त कर हरयाणा में धर्मशिक्षा के क्षेत्र में एक यशस्वी कीर्तिमान् स्थापित किया। इसका श्रेय विद्यालय के सम्पूर्ण स्टाफ व आर्य विद्या परिषद् हरयाणा को जाता है। इसके लिए विद्यालय की तरफ से सभा के अधिकारियों, अध्यापक-अध्यापिकाओं एवं छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं व बधाई हो। विद्यालय के निदेशक आचार्य अभयसिंह जी एवं प्राचार्या श्रीमती रेखा शर्मा ने प्रथम प्राप्त छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया।

—आचार्य राजकुमार शर्मा,
संस्कृत-धर्माचार्य 9416333226

सांसारिक जीवन के सुख व मोक्ष का.... पृष्ठ 2 का शेष....

ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतुयें होती हैं। इन ऋतुओं के अनुसार व अनुकूल ही हमें भोजन करना चाहिये। अपने शरीर की प्रकृति व स्थिति के अनुसार भोजन हितभुक् कहा जाता है तथा भूख से कुछ कम भोजन करना मितभुक् कहा जाता है। भोजन निश्चित समय पर हो तो लाभदायक होता है। असमय के भोजन का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य के प्रति सजग व्यक्तियों को इन सभी नियमों को भी ध्यान में रखना चाहिये। लेख के आरम्भ में हमने मन को सत्य से युक्त या सत्याचरण में प्रवृत्त करने की बात कही है। मनुष्य का मन ही सुख व दुख का कारण हुआ करता है। शास्त्र में इसे इस रूप में कहा गया है कि मनुष्य का मन ही बन्धन अर्थात् दुख का कारण तथा बन्धनों से मुक्ति, सुख अर्थात् मोक्ष का कारण हुआ करती है। सुखों की प्राप्ति एवं भोग अच्छे स्वास्थ्य से ही सम्भव है। ईश्वर के सत्य स्वरूप का ध्यान व चिन्तन करते हुए उसकी प्रार्थना व उपासना करना भी शरीर को स्वस्थ व दीर्घायु बनाने में उपयोगी रहता है। अतः स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए शुद्ध, पवित्र व स्वास्थ्यवर्धक भोजन करना चाहिये और संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए अपने शरीर को स्वस्थ बनाकर सुखी रहना चाहिये। लेख को विराम देने से पूर्व हम यह कहना चाहते हैं कि हमें अपना यह शरीर ईश्वर व माता-पिता से मिलता है, यह हमारे अपने अधिकार में नहीं है, परन्तु स्वास्थ्य के नियमों का पालन कर अपने शरीर को स्वस्थ व बलिष्ठ बनाना हमारे अपने हाथों में हैं। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो रोगी हो सकते हैं जिसका परिणाम दुःख व मृत्यु के रूप में सामने आता है और हमारा जीवन क्लेशों से भर जाता है। क्लेश की स्थिति का निवारण रोग को आने ही न देना है व इसके लिए हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना है।

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।